

संकल्पना- (पद्य)-

## कर चले हम फ़िदा

कवि-कैफ़ी आजमी

सारांश  
विषयवस्तु  
चित्रात्मकता

### प्रश्न अभ्यास

(क )निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

प्रश्न 1 :- क्या इस गीत की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है ?

उत्तर :- यह गीत सन 1962 के भारत - चीन युद्ध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। चीन ने तिब्बत की ओर से युद्ध किया और भारतीय वीरों ने इसका बहादुरी से सामना किया।

प्रश्न 2 :- 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया ', इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतिक है ?

उत्तर :- हिमालय भारत के मानसम्मान का प्रतिक है। देश के वीर जवानों ने अपने प्राणों का बलिदान दे कर भी देश के मान सम्मान की रक्षा की।

प्रश्न 3 :- इस गीत में धरती को दुल्हन क्यों कहा गया है ?

उत्तर :- जिस तरह से दुल्हन को लाल जोड़े में सजाया जाता है उसी तरह सैनिकों ने भी अपने प्राणों का बलिदान देकर धरती को खून से लाल कर दिया है इसीलिए धरती को दुल्हन कहा गया है।

प्रश्न 4 :- गीत में ऐसे क्या खास बात होती है कि वे जीवन भर याद रह रह जाते हैं ?

उत्तर -: गीत में भावनात्मकता ,संगीतात्मकता ,लयबद्धता , सच्चाई आदि गुण होते हैं जिसके कारण वे जीवन भर याद रह जाते हैं। 'कर चले हम फ़िदा ' गीत में देशभक्ति और बलिदान की भावना स्पष्ट दिखाई देती है जिससे ये गीत हर हिंदुस्तानी के दिमाग में छप गया है।

प्रश्न 5 -: कवि ने 'साथियों' सम्बोधन का प्रयोग किसके लिए किया गया है ?

उत्तर -: कवि ने 'साथियों' शब्द का प्रयोग सैनिक, साथियों और देशवासियों के लिए प्रयोग किया है।

प्रश्न 6 -: कवि ने इस कविता में किस काफ़िले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है ?

उत्तर -: इस कविता में काफ़िले शब्द सैनिकों के समूह के लिए प्रयोग किया गया है ,सैनिक कहते हैं की यदि वे शहीद हो जाएँ तो सैनिकों के अनेक समूह तैयार होने चाहिए ताकि दुश्मन देश में ना घुस सके।

प्रश्न 7 -: इस गीत में ' सर पर कफ़न बाँधना ' किस ओर संकेत करता है?

उत्तर -: ' सर पर कफ़न बाँधना ' का अर्थ है ' मौत के लिए तैयार होना। सैनिक अपने अंतिम पलों में देशवासियों को सर पर कफ़न बाँधने के लिए कहता है क्योंकि उसने देश की रक्षा में अपने प्राण त्याग दिए हैं और अब देश की रक्षा का भार देशवासियों पर है।

प्रश्न 8 -: इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर -: प्रस्तुत कविता में देश के सैनिकों की भावनाओं का वर्णन है। सैनिक कभी भी देश के मानसम्मान को बचाने से पीछे नहीं हटेगा। फिर चाहे उसे अपनी जान से ही हाथ क्यों ना गवाना पड़े। सैनिक चाहता है की उसके बलिदान के बाद देश की रक्षा के लिए सैनिकों की कमी नहीं होनी चाहिए। दुश्मन कभी भी उसके द्वारा खींची गई खून की लक्ष्मण रेखा पार ना कर पाए इस उम्मीद से वो देश की रक्षा का भार देशवासियों

पर छोड़ कर जा रहा है। सैनिक कहता है कि देश पर जान न्योछावर करने के मौके बहुत कम आते हैं। ये क्रम टूटना नहीं चाहिए।

**(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए -**

(1) साँस थमती गई, नब्ज जमती गई

फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया

उत्तर - इन पंक्तियों में कवि ने भारतीय जवानों के साहस का वर्णन किया है। कवि कहता है कि भारत - चीन युद्ध के दौरान सैनिकों को गोलियाँ लगने के कारण उनकी साँसें रुकने वाली थी, ठण्ड के कारण उनकी नाड़ियों में खून जम रहा था परन्तु उन्होंने किसी चीज़ की परवाह न करते हुए दुश्मनों का बहदुरी से मुकाबला किया और दुश्मनों को आगे नहीं बढ़ने दिया।

(2) खींच दो अपने खून से जमीं पर लकीर

इस तरफ आने पाए न रावण कोई

उत्तर - इन पंक्तियों में सैनिक भारत की धरती को सीता की तरह मानता है और अपने साथियों से कहता है की अपने खून से लक्ष्मण रेखा खींच लो ताकि कोई दुश्मन रूपी रावण भारत के आँचल को छू भी न सके।

(3) छू न पाए सीता का दामन कोई

राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो

उत्तर - इन पंक्तियों में सैनिक देशवासियों से कहता है कि वो तो अपना कर्तव्य निभाता हुआ देश के लिए शहीद हो रहा है परन्तु उसके बाद सीता अर्थात् भारत की भूमि की रक्षा करने वाले राम और लक्ष्मण दोनों हम ही हैं ।